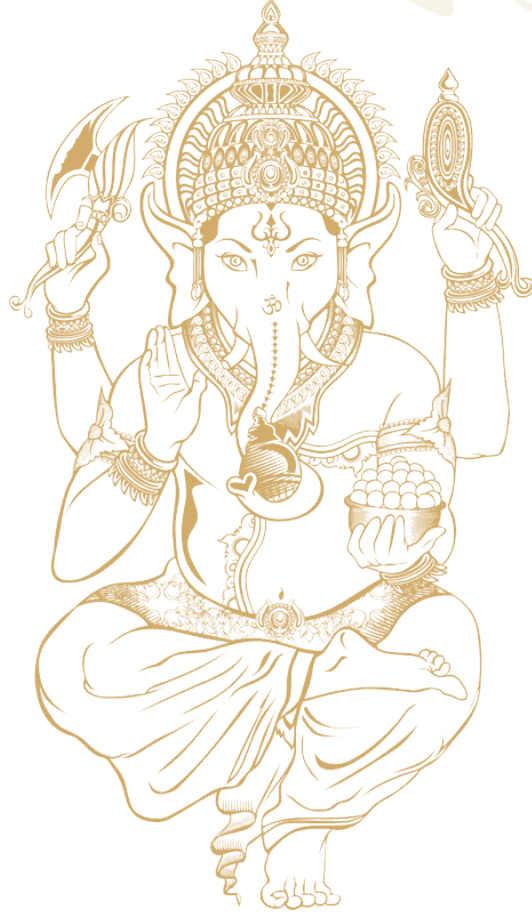




Maitri

20 Sep 2006

04:35 PM

Ahmedabad

Model: All-Dosha-Report

Order No: 120029701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 20/09/2006
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 16:35:00 घंटे
इष्ट _____: 25:18:59 घटी
स्थान _____: Ahmedabad
राज्य _____: Gujarat
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:03:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:40:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:39:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 15:55:40 घंटे
वेलान्तर _____: 00:06:26 घंटे
साम्पातिक काल _____: 15:52:28 घंटे
सूर्योदय _____: 06:27:24 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:37:55 घंटे
दिनमान _____: 12:10:32 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 03:24:02 कन्या
लग्न के अंश _____: 25:09:07 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: मघा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: साध्य
करण _____: विष्टि
गण _____: राक्षस
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: मे-मेनका
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1928	भाद्रपद	29
पंजाबी	संवत : 2063	आश्विन	5
बंगाली	सन् : 1413	आश्विन	3
तमिल	संवत : 2063	पुरुटासी	4
केरल	कोल्लम : 1182	कन्नी	4
नेपाली	संवत : 2063	आश्विन	4
चैत्रादि	संवत : 2063	आश्विन	कृष्ण 13
कार्तिकादि	संवत : 2063	भाद्रपद	कृष्ण 13

पंचांग

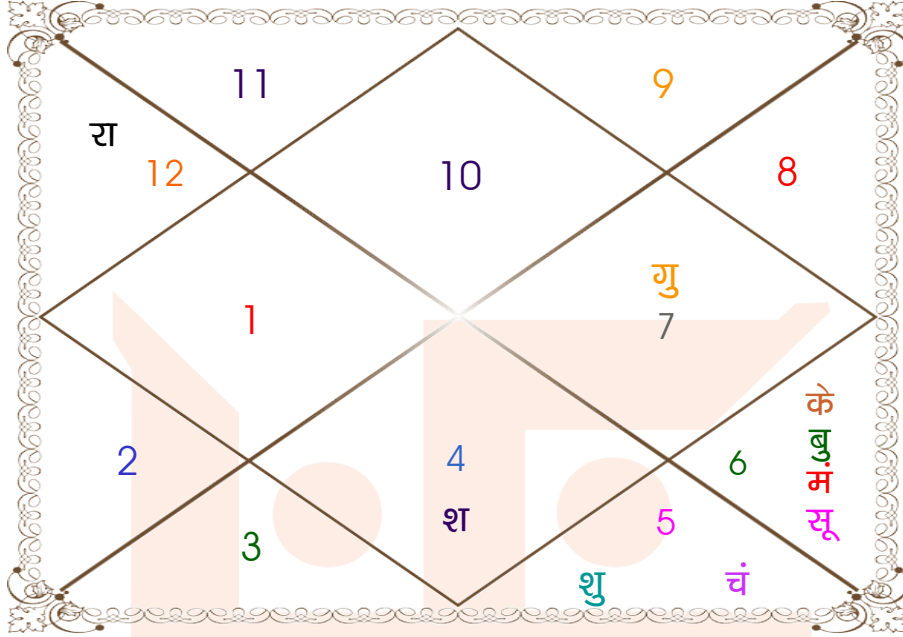
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
 तिथि समाप्ति काल _____ : 12:01:19
 जन्म तिथि _____ : 14
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मघा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 20:22:24 घंटे
 जन्म योग _____ : मघा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
 योग समाप्ति काल _____ : 07:28:42 घंटे
 जन्म योग _____ : साध्य
 सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
 करण समाप्ति काल _____ : 12:01:19 घंटे
 जन्म करण _____ : विष्टि
 भयात _____ : 57:56:15
 भभोग _____ : 67:24:46
 भोग्य दशा काल _____ : केतु 0 वर्ष 11 मा 23 दि

घात चक्र

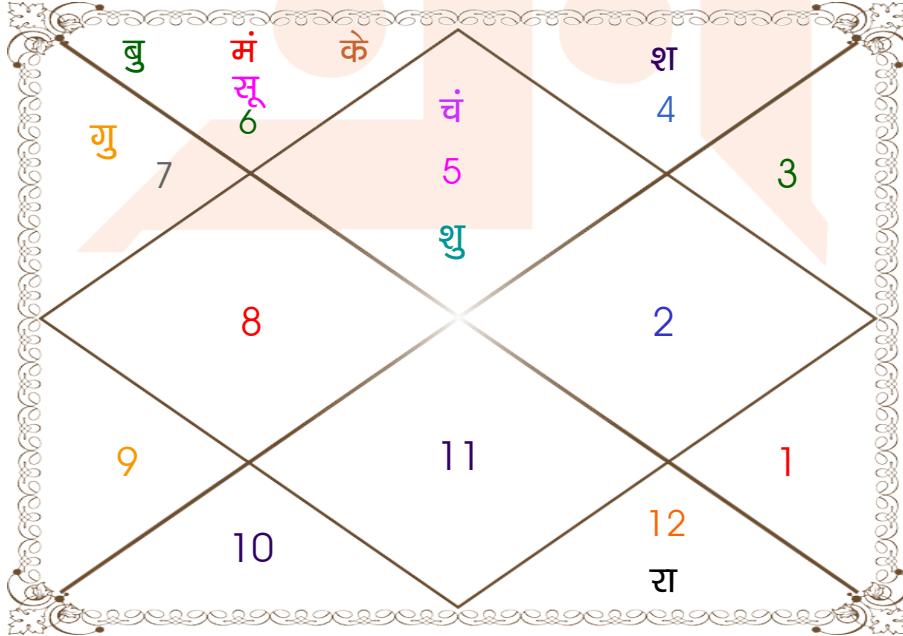
मास _____ : ज्येष्ठ
 तिथि _____ : 3-8-13
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : मूल
 योग _____ : धृति
 करण _____ : बव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मार्जार
 लग्न _____ : मीन
 सूर्य _____ : धनु
 चन्द्र _____ : वृश्चिक
 मंगल _____ : मकर
 बुध _____ : तुला
 गुरु _____ : कुम्भ
 शुक्र _____ : मीन
 शनि _____ : वृश्चिक
 राहु _____ : मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा			
			श
ल			शु चं
		गु	के मं सू बु

लग्न कुंडली

		रा
श		ल
चं शु	गु	
के सू मं बु		

विंशोत्तरी
केतु 0वर्ष 11मा 23दि
केतु

20/09/2006

14/09/2120

केतु	13/09/2007
शुक्र	13/09/2027
सूर्य	13/09/2033
चन्द्र	13/09/2043
मंगल	13/09/2050
राहु	13/09/2068
गुरु	13/09/2084
शनि	14/09/2103
बुध	14/09/2120

योगिनी
भद्रिका 0वर्ष 8मा 12दि
संकटा

02/06/2020

02/06/2028

संकटा	14/03/2022
मंगला	03/06/2022
पिंगला	12/11/2022
धान्या	14/07/2023
भ्रामरी	02/06/2024
भद्रिका	13/07/2025
उल्का	12/11/2026
सिद्धा	02/06/2028

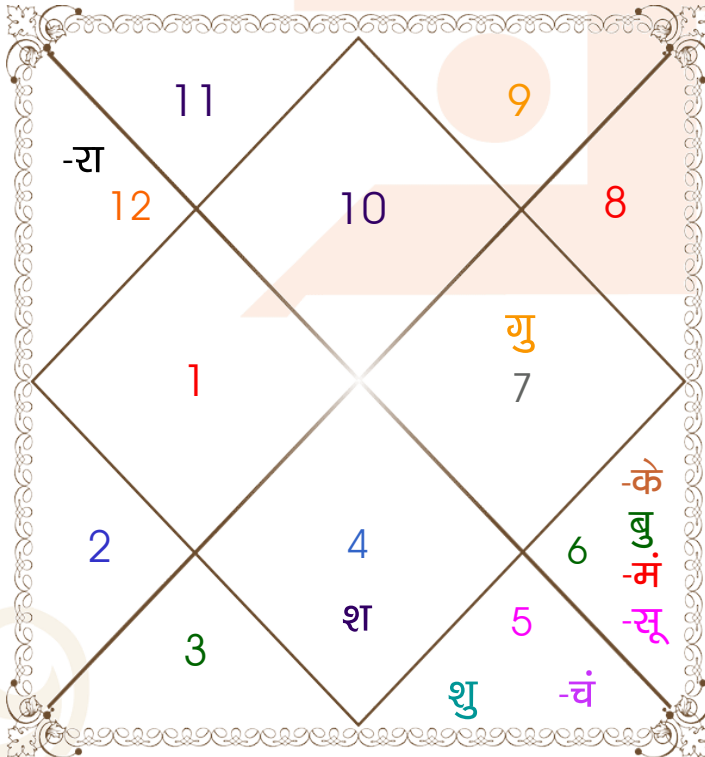
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	25:09:07	429:39:07	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	---
सूर्य			कन्या	03:24:02	00:58:39	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	सम राशि
चंद्र			सिंह	11:27:55	11:50:04	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मित्र राशि
मंगल	अ		कन्या	14:01:01	00:39:09	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि
बुध			कन्या	18:34:00	01:35:09	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण
गुरु			तुला	22:36:12	00:10:39	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			सिंह	23:39:10	01:14:35	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
शनि			कर्क	26:17:30	00:06:40	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मीन	01:25:46	00:00:03	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
केतु			कन्या	01:25:46	00:00:03	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		कुंभ	18:12:22	00:02:17	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	---
नेप	व		मक	23:28:38	00:01:09	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	मंगल	---
प्लूटो			धनु	00:11:23	00:00:30	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	---
दशम भाव			वृश्चि	06:20:13	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	बुध	--

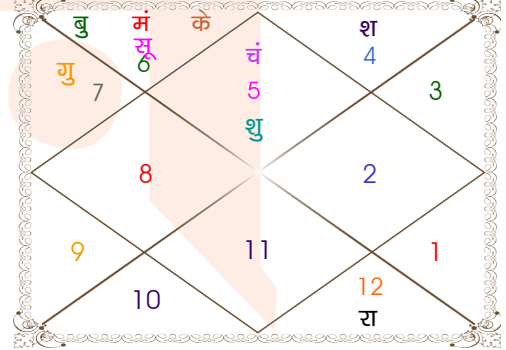
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:57:05

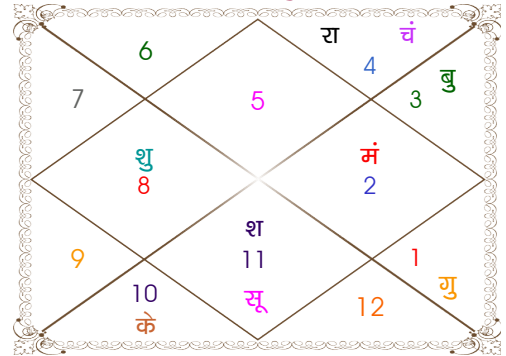
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मकर 12:00:58	मकर 25:09:07
2	कुम्भ 12:00:58	कुम्भ 28:52:49
3	मीन 15:44:40	मेष 02:36:31
4	मेष 19:28:22	वृष 06:20:13
5	वृष 19:28:22	मिथुन 02:36:31
6	मिथुन 15:44:40	मिथुन 28:52:49
7	कर्क 12:00:58	कर्क 25:09:07
8	सिंह 12:00:58	सिंह 28:52:49
9	कन्या 15:44:40	तुला 02:36:31
10	तुला 19:28:22	वृश्चिक 06:20:13
11	वृश्चिक 19:28:22	धनु 02:36:31
12	धनु 15:44:40	धनु 28:52:49

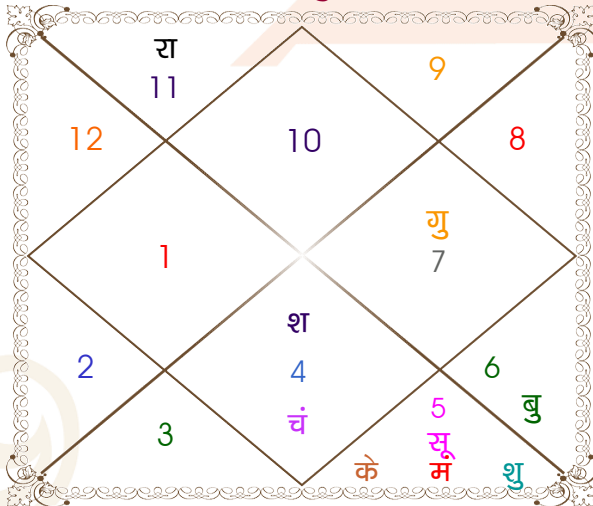
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	25:09:07
2	मीन	03:42:35
3	मेष	08:06:06
4	वृष	06:20:13
5	मिथुन	01:05:00
6	मिथुन	25:56:51
7	कर्क	25:09:07
8	कन्या	03:42:35
9	तुला	08:06:06
10	वृश्चिक	06:20:13
11	धनु	01:05:00
12	धनु	25:56:51

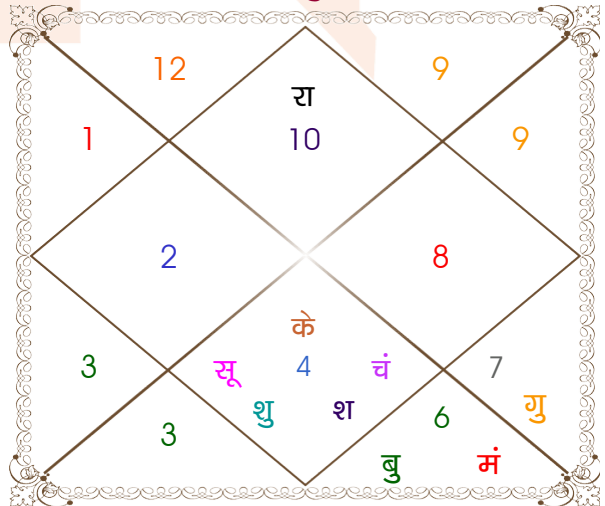
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



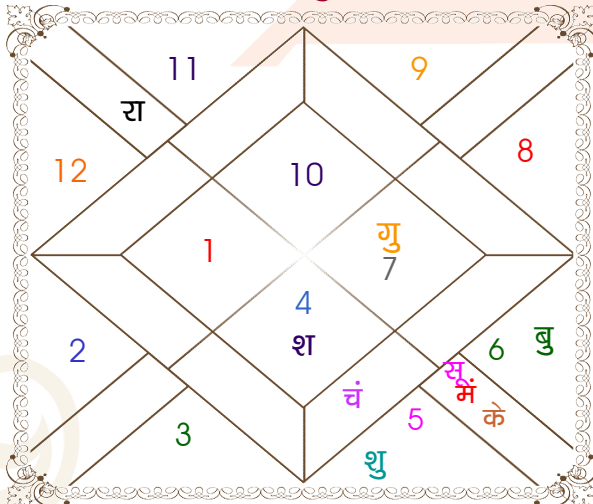
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत शान्त भोजन 1.02 56 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	कुमार मुदित गमन 5.44 26 %
मंगल	पुत्र	भातृ	युवा विकल निद्रा 0.00 11 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	कुमार स्वस्थ भोजन 9.80 80 %
गुरु	भातृ	धन	वृद्ध खल गमन 2.82 71 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	वृद्ध खल भोजन 1.48 29 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल खल भोजन 2.67 73 %
राहु	---	ज्ञान	मृत शक्त गमन 0.00 84 %
केतु	---	मोक्ष	मृत खल भोजन 0.00 84 %
कुल			23.23

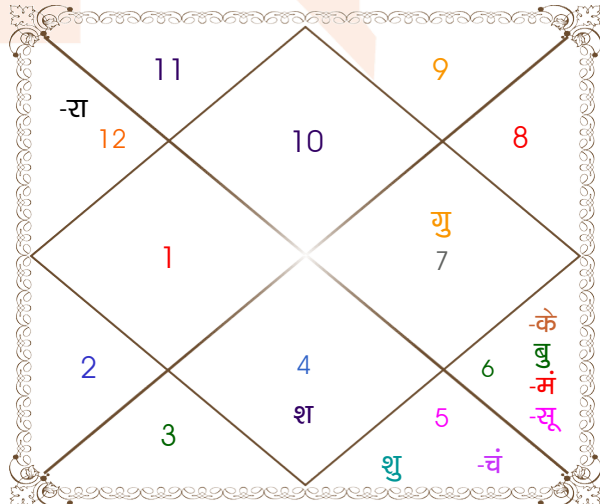
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 0 वर्ष 11 मास 23 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
20/09/2006	13/09/2007	13/09/2027	13/09/2033	13/09/2043
13/09/2007	13/09/2027	13/09/2033	13/09/2043	13/09/2050
00/00/0000	शुक्र 13/01/2011	सूर्य 01/01/2028	चंद्र 14/07/2034	मंगल 10/02/2044
00/00/0000	सूर्य 13/01/2012	चंद्र 02/07/2028	मंगल 12/02/2035	राहु 27/02/2045
00/00/0000	चंद्र 13/09/2013	मंगल 06/11/2028	राहु 13/08/2036	गुरु 03/02/2046
00/00/0000	मंगल 13/11/2014	राहु 01/10/2029	गुरु 13/12/2037	शनि 15/03/2047
00/00/0000	राहु 13/11/2017	गुरु 20/07/2030	शनि 15/07/2039	बुध 11/03/2048
00/00/0000	गुरु 14/07/2020	शनि 02/07/2031	बुध 13/12/2040	केतु 07/08/2048
00/00/0000	शनि 13/09/2023	बुध 08/05/2032	केतु 14/07/2041	शुक्र 07/10/2049
20/09/2006	बुध 14/07/2026	केतु 13/09/2032	शुक्र 15/03/2043	सूर्य 12/02/2050
बुध 13/09/2007	केतु 13/09/2027	शुक्र 13/09/2033	सूर्य 13/09/2043	चंद्र 13/09/2050

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
13/09/2050	13/09/2068	13/09/2084	14/09/2103	14/09/2120
13/09/2068	13/09/2084	14/09/2103	14/09/2120	21/09/2126
राहु 26/05/2053	गुरु 01/11/2070	शनि 16/09/2087	बुध 10/02/2106	केतु 10/02/2121
गुरु 20/10/2055	शनि 14/05/2073	बुध 27/05/2090	केतु 07/02/2107	शुक्र 12/04/2122
शनि 26/08/2058	बुध 20/08/2075	केतु 05/07/2091	शुक्र 08/12/2109	सूर्य 18/08/2122
बुध 14/03/2061	केतु 26/07/2076	शुक्र 04/09/2094	सूर्य 15/10/2110	चंद्र 19/03/2123
केतु 02/04/2062	शुक्र 27/03/2079	सूर्य 17/08/2095	चंद्र 15/03/2112	मंगल 15/08/2123
शुक्र 02/04/2065	सूर्य 13/01/2080	चंद्र 17/03/2097	मंगल 12/03/2113	राहु 01/09/2124
सूर्य 24/02/2066	चंद्र 14/05/2081	मंगल 26/04/2098	राहु 30/09/2115	गुरु 08/08/2125
चंद्र 26/08/2067	मंगल 20/04/2082	राहु 03/03/2101	गुरु 05/01/2118	शनि 17/09/2126
मंगल 13/09/2068	राहु 13/09/2084	गुरु 14/09/2103	शनि 14/09/2120	बुध 21/09/2126

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 0 वर्ष 11 मा 24 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध 13/09/2023 14/07/2026	शुक्र - केतु 14/07/2026 13/09/2027	सूर्य - सूर्य 13/09/2027 01/01/2028	सूर्य - चंद्र 01/01/2028 02/07/2028	सूर्य - मंगल 02/07/2028 06/11/2028
बुध 07/02/2024 केतु 07/04/2024 शुक्र 27/09/2024 सूर्य 18/11/2024 चंद्र 12/02/2025 मंगल 13/04/2025 राहु 15/09/2025 गुरु 31/01/2026 शनि 14/07/2026	केतु 08/08/2026 शुक्र 18/10/2026 सूर्य 08/11/2026 चंद्र 14/12/2026 मंगल 08/01/2027 राहु 13/03/2027 गुरु 09/05/2027 शनि 15/07/2027 बुध 13/09/2027	सूर्य 19/09/2027 चंद्र 28/09/2027 मंगल 04/10/2027 राहु 21/10/2027 गुरु 04/11/2027 शनि 22/11/2027 बुध 07/12/2027 केतु 14/12/2027 शुक्र 01/01/2028	चंद्र 16/01/2028 मंगल 27/01/2028 राहु 23/02/2028 गुरु 19/03/2028 शनि 17/04/2028 बुध 12/05/2028 केतु 23/05/2028 शुक्र 22/06/2028 सूर्य 02/07/2028	मंगल 09/07/2028 राहु 28/07/2028 गुरु 14/08/2028 शनि 04/09/2028 बुध 22/09/2028 केतु 29/09/2028 शुक्र 20/10/2028 सूर्य 27/10/2028 चंद्र 06/11/2028
सूर्य - राहु 06/11/2028 01/10/2029	सूर्य - गुरु 01/10/2029 20/07/2030	सूर्य - शनि 20/07/2030 02/07/2031	सूर्य - बुध 02/07/2031 08/05/2032	सूर्य - केतु 08/05/2032 13/09/2032
राहु 26/12/2028 गुरु 08/02/2029 शनि 01/04/2029 बुध 17/05/2029 केतु 05/06/2029 शुक्र 30/07/2029 सूर्य 16/08/2029 चंद्र 12/09/2029 मंगल 01/10/2029	गुरु 09/11/2029 शनि 25/12/2029 बुध 05/02/2030 केतु 22/02/2030 शुक्र 12/04/2030 सूर्य 26/04/2030 चंद्र 21/05/2030 मंगल 07/06/2030 राहु 20/07/2030	शनि 13/09/2030 बुध 01/11/2030 केतु 22/11/2030 शुक्र 19/01/2031 सूर्य 05/02/2031 चंद्र 06/03/2031 मंगल 26/03/2031 राहु 17/05/2031 गुरु 02/07/2031	बुध 15/08/2031 केतु 02/09/2031 शुक्र 24/10/2031 सूर्य 09/11/2031 चंद्र 05/12/2031 मंगल 23/12/2031 राहु 07/02/2032 गुरु 20/03/2032 शनि 08/05/2032	केतु 15/05/2032 शुक्र 06/06/2032 सूर्य 12/06/2032 चंद्र 23/06/2032 मंगल 30/06/2032 राहु 19/07/2032 गुरु 05/08/2032 शनि 26/08/2032 बुध 13/09/2032
सूर्य - शुक्र 13/09/2032 13/09/2033	चंद्र - चंद्र 13/09/2033 14/07/2034	चंद्र - मंगल 14/07/2034 12/02/2035	चंद्र - राहु 12/02/2035 13/08/2036	चंद्र - गुरु 13/08/2036 13/12/2037
शुक्र 13/11/2032 सूर्य 01/12/2032 चंद्र 31/12/2032 मंगल 22/01/2033 राहु 17/03/2033 गुरु 05/05/2033 शनि 02/07/2033 बुध 23/08/2033 केतु 13/09/2033	चंद्र 08/10/2033 मंगल 26/10/2033 राहु 11/12/2033 गुरु 20/01/2034 शनि 09/03/2034 बुध 22/04/2034 केतु 09/05/2034 शुक्र 29/06/2034 सूर्य 14/07/2034	मंगल 27/07/2034 राहु 28/08/2034 गुरु 25/09/2034 शनि 29/10/2034 बुध 28/11/2034 केतु 10/12/2034 शुक्र 15/01/2035 सूर्य 26/01/2035 चंद्र 12/02/2035	राहु 06/05/2035 गुरु 18/07/2035 शनि 12/10/2035 बुध 29/12/2035 केतु 30/01/2036 शुक्र 30/04/2036 सूर्य 28/05/2036 चंद्र 12/07/2036 मंगल 13/08/2036	गुरु 17/10/2036 शनि 02/01/2037 बुध 12/03/2037 केतु 10/04/2037 शुक्र 30/06/2037 सूर्य 24/07/2037 चंद्र 03/09/2037 मंगल 01/10/2037 राहु 13/12/2037

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि 13/12/2037 15/07/2039	चंद्र - बुध 15/07/2039 13/12/2040	चंद्र - केतु 13/12/2040 14/07/2041	चंद्र - शुक्र 14/07/2041 15/03/2043	चंद्र - सूर्य 15/03/2043 13/09/2043
शनि 15/03/2038 बुध 05/06/2038 केतु 08/07/2038 शुक्र 13/10/2038 सूर्य 11/11/2038 चंद्र 29/12/2038 मंगल 01/02/2039 राहु 28/04/2039 गुरु 15/07/2039	बुध 26/09/2039 केतु 26/10/2039 शुक्र 20/01/2040 सूर्य 15/02/2040 चंद्र 29/03/2040 मंगल 28/04/2040 राहु 15/07/2040 गुरु 22/09/2040 शनि 13/12/2040	केतु 25/12/2040 शुक्र 30/01/2041 सूर्य 10/02/2041 चंद्र 27/02/2041 मंगल 12/03/2041 राहु 13/04/2041 गुरु 11/05/2041 शनि 14/06/2041 बुध 14/07/2041	शुक्र 24/10/2041 सूर्य 23/11/2041 चंद्र 13/01/2042 मंगल 17/02/2042 राहु 19/05/2042 गुरु 09/08/2042 शनि 13/11/2042 बुध 07/02/2043 केतु 15/03/2043	सूर्य 24/03/2043 चंद्र 08/04/2043 मंगल 19/04/2043 राहु 16/05/2043 गुरु 10/06/2043 शनि 08/07/2043 बुध 03/08/2043 केतु 14/08/2043 शुक्र 13/09/2043
मंगल - मंगल 13/09/2043 10/02/2044	मंगल - राहु 10/02/2044 27/02/2045	मंगल - गुरु 27/02/2045 03/02/2046	मंगल - शनि 03/02/2046 15/03/2047	मंगल - बुध 15/03/2047 11/03/2048
मंगल 22/09/2043 राहु 14/10/2043 गुरु 03/11/2043 शनि 27/11/2043 बुध 18/12/2043 केतु 27/12/2043 शुक्र 21/01/2044 सूर्य 28/01/2044 चंद्र 10/02/2044	राहु 07/04/2044 गुरु 28/05/2044 शनि 28/07/2044 बुध 20/09/2044 केतु 13/10/2044 शुक्र 16/12/2044 सूर्य 04/01/2045 चंद्र 05/02/2045 मंगल 27/02/2045	गुरु 14/04/2045 शनि 07/06/2045 बुध 25/07/2045 केतु 14/08/2045 शुक्र 10/10/2045 सूर्य 27/10/2045 चंद्र 24/11/2045 मंगल 14/12/2045 राहु 03/02/2046	शनि 08/04/2046 बुध 04/06/2046 केतु 28/06/2046 शुक्र 04/09/2046 सूर्य 24/09/2046 चंद्र 27/10/2046 मंगल 20/11/2046 राहु 20/01/2047 गुरु 15/03/2047	बुध 05/05/2047 केतु 26/05/2047 शुक्र 26/07/2047 सूर्य 13/08/2047 चंद्र 12/09/2047 मंगल 03/10/2047 राहु 26/11/2047 गुरु 14/01/2048 शनि 11/03/2048
मंगल - केतु 11/03/2048 07/08/2048	मंगल - शुक्र 07/08/2048 07/10/2049	मंगल - सूर्य 07/10/2049 12/02/2050	मंगल - चंद्र 12/02/2050 13/09/2050	राहु - राहु 13/09/2050 26/05/2053
केतु 20/03/2048 शुक्र 14/04/2048 सूर्य 21/04/2048 चंद्र 03/05/2048 मंगल 12/05/2048 राहु 04/06/2048 गुरु 23/06/2048 शनि 17/07/2048 बुध 07/08/2048	शुक्र 17/10/2048 सूर्य 07/11/2048 चंद्र 13/12/2048 मंगल 07/01/2049 राहु 12/03/2049 गुरु 08/05/2049 शनि 14/07/2049 बुध 12/09/2049 केतु 07/10/2049	सूर्य 14/10/2049 चंद्र 24/10/2049 मंगल 01/11/2049 राहु 20/11/2049 गुरु 07/12/2049 शनि 27/12/2049 बुध 14/01/2050 केतु 22/01/2050 शुक्र 12/02/2050	चंद्र 02/03/2050 मंगल 14/03/2050 राहु 15/04/2050 गुरु 14/05/2050 शनि 16/06/2050 बुध 17/07/2050 केतु 29/07/2050 शुक्र 03/09/2050 सूर्य 13/09/2050	राहु 08/02/2051 गुरु 20/06/2051 शनि 23/11/2051 बुध 10/04/2052 केतु 07/06/2052 शुक्र 18/11/2052 सूर्य 07/01/2053 चंद्र 30/03/2053 मंगल 26/05/2053

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

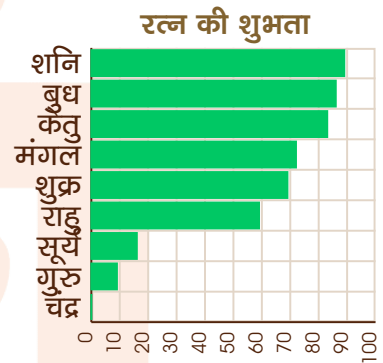
मूलांक	2
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 7, 8, 1
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20, 29, 38, 47, 56
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	89%	दम्पति, स्वास्थ्य, धन
पन्ना	बुध	86%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	83%	भाग्योदय
मूंगा	मंगल	72%	भाग्योदय, सुख, धनार्जन
हीरा	शुक्र	69%	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	59%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	16%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	9%	व्यावसायिक हानि, व्यय, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	13/09/2007	0%	0%	78%	86%	9%	75%	77%	44%	95%
शुक्र	13/09/2027	0%	0%	72%	93%	9%	81%	95%	66%	89%
सूर्य	13/09/2033	41%	9%	78%	86%	22%	56%	77%	44%	70%
चंद्र	13/09/2043	28%	22%	72%	93%	9%	69%	89%	44%	70%
मंगल	13/09/2050	28%	9%	84%	74%	22%	69%	89%	44%	89%
राहु	13/09/2068	0%	0%	59%	86%	9%	75%	95%	72%	70%
गुरु	13/09/2084	28%	9%	78%	74%	34%	56%	89%	59%	83%
शनि	14/09/2103	0%	0%	59%	93%	9%	75%	100%	66%	70%
बुध	14/09/2120	28%	0%	72%	99%	9%	75%	89%	59%	83%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	20/09/2006-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगी तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय नहीं होता। अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा हमेशा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा भी आप कम ही सम्पन्न करेंगी। आयु के साथ साथ जीवन में भाग्य एवं धर्म के महत्व को भी स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना भी रहेगी। आप उत्साह एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार से होगा। साथ ही जमीन जायदाद आदि पर आप अधिक से अधिक व्यय करना पसन्द करेंगी तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। दाम्पत्य जीवन का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में सभी लोग आपके प्रभाव एवं पराक्रम को स्वीकार करेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि सुख से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सांसारिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी लेकिन माता का सुख तथा स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप परिश्रम एवं पराक्रम से कर्म की

महत्ता को प्रमुखता देते हुए अपना भाग्योदय स्वयं करेंगी जिससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता रहेगी। पारिवारिक जनों को यथोचित सुख सुविधाएं प्रदान करने में आप सफल रहेंगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप यज्ञ याजन, दान, भजन, कीर्तन आदि धर्म कार्यों में जातक को अरुचि रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है। लेकिन जातक को राजकीय सेवा का अवसर भी मिलता है और जातक विदेश गमन करता है, जिसमें थोड़ा बहुत क्लेश उठाना पड़ता है। यश, पद, प्रतिष्ठा व पराक्रम के लिए आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के कारण शारीरिक स्थूलता तथा आलस्य थोड़े दिनों के लिए जातक को घेर लेती है। कभी रोग व्याधि भी पकड़ लेती है जिसमें थोड़ा ज्यादा धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट आ जाता है परन्तु कालान्तर में वे सब हट जाते हैं और आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक को पारिवारिक सदस्यों से किसी समय मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से कभी आंशिक क्लेश उठाना पड़ता है। जातक को अपने रिश्तेदार समय पर काम नहीं आते हैं और मित्रगण भी आंशिक रूप में क्लेश पहुँचाते हैं। जातक कानूनी-दस्तावेजों में भावुकतावश हस्ताक्षर कर थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और राज्यपक्ष से कभी प्रतिकूलता व निलम्बित होने का भय बना रहता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। परन्तु जातक के जीवन में एक अच्छा समय भी आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- नवम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, बुध, शनि और केतु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रुके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यों में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति रखते हैं। साथ ही आप हंसमुख हैं। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता है। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रुचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते हैं। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते हैं। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते हैं। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता है। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। कुंडली के षष्ठ भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती है। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता है। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

बुध आपके षष्ठेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान है, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया है। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पत्ति से सम्बंधित विवाद हो सकता है। चन्द्र के प्रभाव से संपत्ति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते हैं।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल

से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते हैं फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत्त रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुःख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान महिला होंगी। आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शों पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगी। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगी। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्विन्द्वियों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगी।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगी। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगी। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रुचिशील होंगी फलतः समाज में एक आदरणीय महिला के रूप में आपके छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपके इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगी। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगी तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगी। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी।

धर्म के प्रति आपके श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं

पराक्रमी महिला होंगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगी ।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति स्पष्ट बोलने की रहेगी तथा जो कुछ भी आपके मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगी। साथ ही आप में निस्वार्थ का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अपने कार्य कलापों को इसी भाव से सम्पन्न करती रहेंगी परन्तु अन्य जनों की बातों में शीघ्र ही आएंगी जिससे यदा कदा आपको अनावश्यक समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। आप एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों के प्रति आपके मन में पूर्ण लगाव रहेगा साथ ही घर को भी हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पसंद करेंगी।

पारिवारिक जनों के लिए आप अत्यधिक चिन्तित रहेंगी तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से आपका उनसे लगाव रहेगा। आप में अनावश्यक चंचलता के भाव का अभाव रहेगा तथा किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगी। आपकी वाणी में मधुरता रहेगी तथा विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना आपको रुचिकर लगेगा। साथ ही पारिवारिक जनों के साथ समय समय पर धार्मिक एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित लाभ प्राप्त करेंगी तथा सज्जनों एवं महात्माओं का समय समय पर सत्कार करती रहेंगी। साथ ही परोपकार संबंधी कार्यों में भी आपकी रुचि होगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है यद्यपि शनि नीचराशि में है लेकिन लग्नेश होकर सामान्यतया शुभफल ही प्राप्त होंगे। अतः सांसारिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगी। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान महिला हैं। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगी।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध महिला की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगी। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगी तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रहेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगी परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगी। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी। जिससे आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी। कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि के द्वारा शीघ्र कर देंगी। अतः अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपका प्रबल आकर्षण एवं रुचि रखेंगी तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों के ज्ञानार्जन में प्रयत्न शील होंगी तथा किसी नवीन सिद्धांत का भी प्रतिपादन कर सकती हैं जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में शुक्र की राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा ऐसे सम्बन्धों से आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम के क्षेत्र में भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि-कोण से युक्त होगा। अतः इसकी परिणीति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति प्राप्त होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन सामान्यतया आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वतन्त्र प्रवृत्ति के होने के कारण यदा-कदा वे किसी महत्वपूर्ण कार्य को बिना माता-पिता की सलाह या सहयोग से भी सम्पन्न कर सकते हैं लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए तथा उनकी योग्यता पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए। इससे आपकी सम्बन्धों में विश्वास, सदभाव एवं मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त वे वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इस प्रकार संतति पक्ष से सामान्यतया सुख एवं सहयोग ही अर्जित करेंगी तथा उनसे सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं परिश्रमी होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक शिक्षा के क्षेत्र में वांछित उन्नति प्राप्त करके अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त आपकी संतति पराक्रमी तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल भी होगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य समाजिक जनों को भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होगी फलतः सभी लोग उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। अतः बच्चों की उन्नति से आप सन्तुष्ट होंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा शनि भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है परन्तु शनि के प्रभाव से उसमें उग्रता पराक्रम एवं साहस का भाव रहता है लेकिन कर्तव्य परायणता के भाव में न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे परन्तु यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। उनके अधिकांश कार्य कलाप पराक्रम से सम्पन्न होंगे तथा अपने साहसिक कार्यों से वे अन्य जनों को प्रभावित करेंगे उनकी प्रवृत्ति स्वाभिमानी होगी। सप्तम भावस्थ शनि के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की भी उनमें न्यूनता रहेगी एवं स्वार्थी प्रवृत्ति भी होगी फलतः परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन कम करेंगे।

आपके पति किंचित श्याम वर्ण के आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु शरीर में पुष्टता बनी रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भौतिकता के प्रति उनका लगाव होगा तथा पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति में भी उनका रुझान रहेगा एवं कला के प्रति भी रुचि रहेगी।

सप्तम भाव में शनि के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध उत्पन्न होंगे। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा शनि के प्रभाव से आप प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा आकर्षण रहेगा। लेकिन शनि के प्रभाव से पति की तेजस्विता तथा सहिष्णुता का भाव यदा कदा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। अतः ऐसे समय में आपको संयम एवं धैर्य पूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से उनकी स्थिति सुदृढ़ होगी। विवाह में आपको उपहार स्वरूप बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण प्राप्त होंगे। सास ससुर से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा दोनों ओर से औपचारिकताएं रहेंगी तथापि एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा तथा समयानुसार एक दूसरे को नैतिक या अन्य रूप से सहयोग के लिए तत्पर होंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा भाव नहीं रहेगा तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगे। साथ ही साले एवं सालियां भी उनके व्यवहार एवं वाणी से असन्तुष्ट रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का सम्मान तथा सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः जीवन में साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही बृहस्पति भी दशम भाव में ही स्थित है। तुला राशि एवं बृहस्पति दोनों वायुतत्व प्रधान है अतः इनके प्रभाव को आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें अल्पता रहेगी। साथ ही इससे उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर होंगी। आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय की भी इच्छुक होंगी तथा इसमें आपको वांछित सफलता भी प्राप्त होगी।

दशमभाव में तुलाराशिस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका क्षेत्र शिक्षा विभाग, शिक्षक व्याख्याता प्रोफेसर, शोध कार्य, धर्मोपदेशक, न्याय विभाग, वकील, न्यायाधीश, सचिव, सलाहकार, बैंक क्षेत्र, शेयर विभाग, व्यवस्थापक, प्रबन्धक, कार्मिक विभाग, इलेक्ट्रॉनिक्स या कम्प्यूटर में इच्छित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी एवं इसमें अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही आजीविका कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सुवर्ण आदि का व्यापार, शेयर ब्रोकर या क्रय विक्रय, वित्त कम्पनी में पूंजी निवेश या किसी कम्पनी का स्वामित्व किसी संस्था का संचालन, कम्प्यूटर कन्सल्टेन्सी, रेशमी या आलंकारिक वस्त्रों का आयात निर्यात से वांछित धन एवं लाभ अर्जित होगा। साथ ही आप ज्योतिष, पांडित्य, कला आदि का भी स्वतंत्र व्यवसाय कर सकती हैं तथा राजनीति में भी आपको वांछित लाभ एवं उन्नति मिलेगी अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपना कार्य प्रारंभ करना चाहिए।

दशमभाव में बृहस्पति की स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा स्वयोग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही समाज में भी आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। आप किसी सामाजिक शैक्षणिक, धार्मिक या अन्य संस्था या क्लब आदि में कोई सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य हो सकती हैं। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा उपलब्धियों से आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आपके पिता शिक्षित विद्वान बुद्धिमान एवं अच्छे स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली तथा आदरणीय व्यक्ति माने जाएंगे। वे भी सामाजिक जनों के हित कार्यों में तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्च शिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा तथा सुगमता पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। आप भी स्वपरिश्रम एवं योग्यता से कार्य कलापों को सम्पन्न करके पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगी। आपके आपसी संबंधों में सामान्यतया मधुरता होगी तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। लेकिन सांसारिक महत्व के कार्यों को आप एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि तृतीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि छठे भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि छठे भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्य स्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

14 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बन रहे हैं। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

14 मई के बाद कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी पर आपका धन व्यय हो सकता है। किसी को ऋण न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी।

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भधान के लिए समय शुभ चल रहा है। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद आपको सामाजिक पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति

होगी। छोटे भाई-बहनों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा एवं बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

14 मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग, सांस या पेट से संबंधित रोग हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षाधियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राएं कराते रहेंगे। नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक गतिविधियों तथा तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तुओं का दान दें।
- माता-पिता, गुरु, साधू-संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमें आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते हैं।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जून के बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा परन्तु 02 जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्त्वराशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे के तवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव

पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते हैं जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त कर लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के

संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर धूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।